मल्हार कक्षा 6 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक का विश्लेषणात्मक अध्ययन

नरेश कुमार*

पाठ्यपुस्तकें शैक्षिक अनुभव के लिए आधारभूत होती हैं, जो विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों के लिए प्राथमिक संसाधन के रूप में काम करती हैं। भारत में विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (एन.सी.एफ.एस.ई. 2023) प्रभावी पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए प्रमुख सिद्धांतों की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। यह लेख उन सिद्धांतों का उल्लेख करता है, जो पाठ्यपुस्तकों के निर्माण एवं विकास के लिए अति आवश्यक हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एन.ई.पी. 2020) और इसके आधार पर विकसित विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023, भारतीय विद्यालयी शिक्षा में समग्र सुधार की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 पाठ्यपुस्तक निर्माण को केवल ज्ञान हस्तांतरण का माध्यम न मानकर इसे बच्चों के समग्र विकास, व्यावहारिक समझ, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता और संवेदनशीलता को विकसित करने का साधन मानती हैं। इस लेख में विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में वर्णित पाठ्यपुस्तकों के निर्माण से संबंधित मुख्य सिद्धांतों के आलोक में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा प्रकाशित कक्षा 6 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक मल्हार का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभवों को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये केवल सूचना के भंडार नहीं हैं अपितु उससे कहीं अधिक हैं। पाठ्यपुस्तकें सीखने की प्रक्रियाओं का मार्गदर्शन करने, आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने और मूल्यों को विकसित करने में सहायक होती हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि पाठ्यपुस्तकें दुनियाभर की शैक्षिक प्रणालियों की आधारशिला हैं, जो कक्षाओं में सीखने का समर्थन करने के लिए संरचित सामग्री और संसाधन प्रदान करती हैं। भारत के संदर्भ में *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* ने प्रमुख सिद्धांत पेश किए हैं, जो पाठ्यपुस्तकों के डिज़ाइन अर्थात् निर्माण और विकास को रेखांकित करते हैं। इन सिद्धांतों का उद्देश्य न केवल शैक्षिक संसाधनों की गुणवत्ता को बढ़ाना है बल्कि समावेशी तथा प्रभावी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देना भी है।

**सहायक आचार्य*, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, वरुण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली 110024

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 इस बात पर बल देती है कि पाठ्यपुस्तकों में केवल पाठ्यक्रम को ही सम्मिलित नहीं करना चाहिए, बल्कि विशिष्ट शिक्षण परिणामों को प्राप्त करने के लिए गतिशील उपकरण के रूप में काम करना चाहिए। वास्तव में यह दृष्टिकोण पारंपरिक दृष्टिकोण से अलग है, जहाँ पाठ्यपुस्तकों को शिक्षण और सीखने के लिए प्राथमिक संसाधन के रूप में देखा जाता था। अब ध्यान अन्य शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) और डिजिटल उपकरणों के साथ-साथ शिक्षकों के लिए उपलब्ध कई संसाधनों में से एक के रूप में पाठ्यपुस्तकों का उपयोग करने पर है। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 एक व्यापक ढाँचा प्रस्तुत करती है, जो पाठ्यपुस्तकों के डिज़ाइन एवं विकास का मार्गदर्शन करती है। भारतीय विद्यालयी शिक्षा में पाठ्यपुस्तकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है, जो अक्सर कक्षा में बातचीत और सीखने की प्रक्रियाओं में केंद्रीय स्थान रखती है। हालाँकि पाठ्यचर्या तथा पाठ्यक्रम को संतुलित रूप से प्रस्तुत करने के लिए प्राथमिक और कभी-कभी एकमात्र संसाधन के रूप में पाठ्यपुस्तकों पर अत्यधिक निर्भरता ने एक ऐसी संस्कृति को जन्म दिया है, जहाँ अन्य शिक्षण और सीखने की सामग्री का महत्त्व कम हो जाता है। इस दृष्टिकोण को एक मज़बूत शैक्षिक प्रणाली के विकास के लिए अस्वस्थ और अनुपयोगी माना जाता है। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 इस बात पर बल देती है कि विद्यालयी शिक्षा का केंद्रीय उद्देश्य सीखने के मानकों को प्राप्त करना है जो पाठ्यपुस्तकों की भूमिका में बदलाव का संकेत है। केवल पाठ्यपुस्तक की सामग्री को पूरा करने के बजाय कक्षा की चर्चा को विशिष्ट सीखने के परिणामों को प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। पाठ्यपुस्तकों को सूचना और निर्देश के एकमात्र स्रोत के बजाय शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध कई संसाधनों में से एक के रूप में देखा जाना चाहिए।

पाठ्यपुस्तक डिज़ाइन या निर्माण के मुख्य सिद्धांत

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में पाठ्यपुस्तक डिज़ाइन या निर्माण से संबंधित प्रस्तुत किए गए मुख्य सिद्धांतों की विवेचना निम्नलिखित है—

1. **पाठ्यक्रम सिद्धांत**— पाठ्यपुस्तक डिज़ाइन या निर्माण का पाठ्यक्रम सिद्धांत पाठ्यपुस्तकों को ग्रेड और शैक्षिक चरण दोनों के लिए निर्दिष्ट दक्षताओं और सीखने के परिणामों को पूरा करने के लिए सावधानीपूर्वक डिज़ाइन किए जाने की आवश्यकता पर बल देता है। "पाठ्यपुस्तक निर्माणकर्ताओं को उस विशिष्ट डोमेन या विषय की दक्षताओं को अच्छी तरह से समझना चाहिए जिसके लिए वे पाठ्यपुस्तक बना रहे हैं। इसके अलावा उन्हें शिक्षा के पूरे चरण के लिए व्यापक दक्षताओं का ज्ञान होना चाहिए" (*विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*, पृष्ठ 94)। यह व्यापक समझ उन्हें उस चरण के भीतर विभिन्न ज्ञानक्षेत्र (डोमेन) और पाठ्यचर्या क्षेत्रों में क्षैतिज संबंध को एकीकृत करने में सक्षम बनाती है। ऐसा करने से पाठ्यपुस्तकें अधिक सुसंगत और अंतःविषयात्मक रूप से सीखने के अनुभव की सुविधा प्रदान कर सकती हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि विद्यार्थी न केवल विषय-विशिष्ट

कौशल को समझें बल्कि विभिन्न विषयों में ज्ञान के परस्पर संबंध को भी देखें। यह सिद्धांत सुनिश्चित करता है कि पाठ्यपुस्तकें अपने दृष्टिकोण में अलग-थलग नहीं हैं; बल्कि विद्यार्थियों के बीच ज्ञान की समग्र समझ और अनुप्रयोग को बढ़ावा देने वाली व्यापक, परस्पर जुड़ी शैक्षिक रूपरेखा का हिस्सा हैं।

2. **मूल्य सिद्धांत**— मूल्य सिद्धांत विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 द्वारा व्यक्त वांछनीय मानवीय मूल्यों और प्रवृत्तियों को पाठ्यपुस्तक की सामग्री में समाहित करने के महत्त्व को रेखांकित करता है। मूल्य अक्सर विद्यालय की संस्कृति और वातावरण के माध्यम से निहित रूप से प्रकट होते हैं लेकिन पाठ्यपुस्तकें इन मूल्यों को प्रतिबिंबित करने और सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पाठ्यपुस्तक की सामग्री को सावधानीपूर्वक चुनी गई भाषा और उदाहरणों के माध्यम से करुणा, सम्मान और विनम्रता जैसे मूल्यों को सूक्ष्म रूप से बढ़ावा देना चाहिए। उदाहरण के लिए, "गाय हमें दूध देती हैं" के बजाय "हम गायों से दूध लेते हैं" वाक्यांश का उपयोग करने से जानवरों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता की भावना बढ़ती है। इसी तरह "अमुंडसेन ने दक्षिण ध्रुव पर विजय प्राप्त की" के बजाय "अमुंडसेन दक्षिण ध्रुव पर पहुँचने वाले पहले व्यक्ति थे" कहना वर्चस्व की धारणा के बिना उपलब्धि पर बल देता है। (*विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023;* पृष्ठ 63–64, अनुच्छेद 3.2.2.2)। ऐसी बारीकियों को शामिल करके पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और प्रवृत्तियों को आकार देने में मदद कर सकती हैं जो नीति संबंधी और नैतिक रूप से आधारित व्यक्तियों के पोषण के व्यापक शैक्षिक लक्ष्य के साथ संरेखित होती हैं।

3. **अनुशासन (विषयात्मक) सिद्धांत**— पाठ्यपुस्तक डिज़ाइन या निर्माण का विषयगत सिद्धांत पाठ्यपुस्तक निर्माणकर्ताओं के लिए पाठ्यपुस्तक से संबंधित शैक्षणिक अनुशासन की गहन समझ रखने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। यह सिद्धांत सुनिश्चित करता है कि पाठ्यसामग्री सटीक, विश्वसनीय और विषय क्षेत्र के मूलभूत सिद्धांतों का पालन करती है। पाठ्यपुस्तक निर्माणकर्ताओं को विषय की अखंडता को बनाए रखने, विरोधाभासों और गलत बयानी से बचने के लिए सावधानीपूर्वक सामग्री का चयन और अनुक्रम करना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक में वैज्ञानिक रूप से सटीक जानकारी प्रस्तुत करना और एक तार्किक प्रगति का पालन करना महत्त्वपूर्ण है, जो अनुशासन (विषय) के मूल सिद्धांतों जैसे वैज्ञानिक पद्धति को दर्शाता है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को विषय की सुसंगत और सटीक समझ बनाने में मदद करता है। अनुशासन (विषयात्मक) सिद्धांत का पालन करके पाठ्यपुस्तकें भरोसेमंद संसाधनों के रूप में काम करती हैं जो विद्यार्थियों को विषय में एक ठोस आधार प्रदान करती हैं एवं उनकी गहरी समझ को बढ़ावा देने में मदद करती हैं।

4. **शिक्षाशास्त्र सिद्धांत**— *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* में वर्णित पाठ्यपुस्तक डिज़ाइन से संबंधित शिक्षाशास्त्र सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि

पाठ्यपुस्तक निर्माणकर्ताओं को 'प्रत्येक विषय की दक्षताओं और सामग्री के लिए उपयुक्त शिक्षण विधियों को समझना चाहिए।' उदाहरण के लिए "फाउंडेशनल स्टेज या स्तर के लिए भाषा सीखने में मौखिक भाषा, ध्वन्यात्मकता, शब्द-समाधान निर्देश और अर्थ-निर्माण को शामिल करने वाला एक संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है" (*विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*, पृष्ठ 64, अनुच्छेद 3.2.4 सी) पाठ्यपुस्तक निर्माणकर्ताओं को व्यापक भाषा विकास का समर्थन करने के लिए इन तत्त्वों को समग्र रूप से एकीकृत करना चाहिए। इसके अतिरिक्त यह सिद्धांत पाठ्यपुस्तकों को अत्यधिक विवरणों से भरने से बचने की सलाह देता है, जो विद्यार्थियों को अभिभूत कर सकता है और सीखने के आवश्यक उद्देश्यों से विचलित कर सकता है। इसके बजाय सामग्री संक्षिप्त होनी चाहिए तथा प्रमुख अवधारणाओं और कौशल पर केंद्रित होनी चाहिए। यह सुव्यवस्थित दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि विद्यार्थी सामग्री के साथ गहराई से जुड़ सकें, बेहतर समझ और अवधारण को बढ़ावा दे सकें। पाठ्यपुस्तक की सामग्री को प्रभावी शैक्षणिक रणनीतियों के साथ जोड़कर और स्पष्टता व प्रासंगिकता बनाए रखते हुए निर्माणकर्ता ऐसे संसाधन बना सकते हैं, जो सार्थक एवं कुशल सीखने के अनुभवों को सुविधाजनक बनाते हैं।

5. **भाषा सिद्धांत**— भाषा सिद्धांत पाठ्यपुस्तकों में ऐसी भाषा का उपयोग करने के महत्त्व पर बल देता है जो प्रत्येक ग्रेड स्तर के लिए अपेक्षित भाषा दक्षताओं के साथ संरेखित हो। शुरुआती ग्रेड के लिए जब विद्यार्थी अभी भी पढ़ना सीख रहे होते हैं, तो पाठ्यपुस्तक निर्माण के संदर्भ में ऐसी भाषा का उपयोग करना चाहिए, जो उस स्तर के विद्यार्थियों के लिए सुलभ और समझने योग्य हो। इसमें शब्दावली और स्पष्टीकरण के माध्यम से अपरिचित शब्दावली और जटिल वाक्य संरचनाओं के लिए मचान प्रदान करना शामिल है। इस तरह का समर्थन युवा शिक्षार्थियों को बिना अभिभूत हुए अपने पढ़ने के कौशल का निर्माण करने में मदद करता है। जैसे-जैसे विद्यार्थी उच्च ग्रेड में आगे बढ़ते हैं, अकादमिक भाषाई दक्षता विकसित करना महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इस स्तर पर भाषाई कौशल को बढ़ाने के लिए केवल भाषा की पाठ्यपुस्तकों की ज़िम्मेदारी नहीं है। विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकों को प्रत्येक अनुशासन (विषय) के भीतर उपयोग की जाने वाली विशिष्ट भाषा और शब्दावली को भी शामिल और उजागर करना चाहिए। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि विद्यार्थी विषय-विशिष्ट भाषा की एक मजबूत समझ विकसित करें, जो जटिल अवधारणाओं में महारत हासिल करने तथा विभिन्न विषयों में अकादमिक सामग्री के साथ गहराई से जुड़ने के लिए आवश्यक है।

6. **प्रौद्योगिकी सिद्धांत**— पाठ्यपुस्तक निर्माण से संबंधित प्रौद्योगिकी सिद्धांत विद्यार्थियों के सीखने के अनुभवों को बढ़ाने के लिए वर्तमान तकनीकी और ऑडियो-विजुअल संसाधनों के एकीकरण पर बल देता है। "पाठ्यपुस्तक निर्माणकर्ताओं को उपलब्ध डिजिटल टूल और सामग्रियों के बारे में जानकारी रखनी चाहिए जो पारंपरिक पाठ्यपुस्तक सामग्री को पूरक और

समृद्ध कर सकते हैं" (*विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*, पृष्ठ 64–65, अनुच्छेद 3.2.4 डी)। इसमें डिजिटल तकनीक से जुड़ी गतिविधियों को शामिल करना समाहित है, जैसे— अंतःक्रियात्मक अभ्यास, मल्टीमीडिया संसाधन और ऑनलाइन संदर्भ। इन तत्त्वों को शामिल करके पाठ्यपुस्तकें गतिशील एवं आकर्षक सीखने के अवसर प्रदान कर सकती हैं, जो स्थिर पाठ से परे हैं। उदाहरण के लिए, शैक्षिक वीडियो, वर्चुअल लैब या इंटरैक्टिव सिमुलेशन से लिंक करना विद्यार्थियों की जटिल अवधारणाओं की समझ को गहरा कर सकता है और सीखने को अधिक अंतःक्रियात्मक और आनंददायक बना सकता है। यह सिद्धांत विचारशील एकीकरण को भी यह सुनिश्चित करते हुए प्रोत्साहित करता है कि डिजिटल संसाधन प्रासंगिक हैं और पाठ्यक्रम में सहज रूप से बुने गए हैं। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को तकनीकी रूप से उन्नत दुनिया के लिए तैयार करने, डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने और विविध, अभिनव शिक्षण विधियों के माध्यम से उनके समग्र शैक्षिक अनुभव को बढ़ाने में मदद करता है।

7. **संदर्भ सिद्धांत**— *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* में वर्णित पाठ्यपुस्तक डिज़ाइन से संबंधित संदर्भ सिद्धांत पाठ्यपुस्तकों के लिए सामग्री चुनते समय (विशेषरूप से आधारभूत और प्रारंभिक चरणों के लिए) स्थानीय संदर्भ और पर्यावरण पर विचार करने के महत्त्व पर प्रकाश डालता है। युवा शिक्षार्थियों के लिए परिचित संदर्भों से शुरू करना आराम और जुड़ाव की भावना बनाने में मदद करता है जिससे आसान समझ और जुड़ाव की सुविधा मिलती है। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते हैं। अपरिचित संदर्भों को पेश करना जिज्ञासा को उत्तेजित करता है और उनकी सोच को चुनौती देता है एवं संज्ञानात्मक विकास और अनुकूलनशीलता को बढ़ावा देता है। यह संतुलित दृष्टिकोण विद्यार्थियों को ज्ञात से अज्ञात में आसानी से संक्रमण करने में मदद करता है। जिससे नई जानकारी की गहरी समझ और अवधारणा को बढ़ावा मिलता है। इसके विपरीत मध्य और माध्यमिक चरणों के लिए सभी पाठ्यक्रम क्षेत्रों में स्थानीय संदर्भ पर बल कम महत्त्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि विद्यार्थियों से व्यापक, अधिक जटिल अवधारणाओं और वैश्विक दृष्टिकोणों से जुड़ने की अपेक्षा की जाती है। इन उन्नत चरणों में ध्यान आलोचनात्मक सोच तथा उन्नत ज्ञान विकसित करने की ओर जाता है, जिससे स्थानीय संदर्भ सीखने की प्रक्रिया में कम केंद्रीय हो जाता है।

8. **प्रस्तुति सिद्धांत**— विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का प्रस्तुति सिद्धांत विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए दृश्य रूप से आकर्षक पाठ्यपुस्तक डिज़ाइन के महत्त्व को रेखांकित करता है। "आधारभूत और प्रारंभिक चरणों के लिए पाठ्यपुस्तकों को पाठ पर दृश्य सामग्री को प्राथमिकता देनी चाहिए एवं सीखने को आकर्षक और आनंददायक बनाने के लिए आकर्षक रंग योजनाओं और सुसंगत डिज़ाइन थीम का उपयोग करना चाहिए। पाठ के फ़ॉन्ट (अक्षर) और आकार उनकी पठनीयता के लिए चुने जाने चाहिए ताकि छोटे बच्चे आसानी से

जानकारी को समझ सकें" (*विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*, पृष्ठ 65, अनुच्छेद 3.2.4 एफ) इसके विपरीत मध्य और माध्यमिक चरणों के लिए ध्यान अवधारणाओं के तार्किक प्रवाह एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति पर जाता है। चित्रण द्वारा न केवल अवधारणाओं को स्पष्ट करना चाहिए बल्कि चर्चाओं को प्रोत्साहित भी करना चाहिए तथा इसके साथ ही, विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित भी करना चाहिए, जिससे गहरी समझ व आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा मिले। प्रत्येक शैक्षिक चरण के अनुरूप प्रभावी प्रस्तुति सामग्री को सुलभ, आकर्षक और विचारोत्तेजक बनाकर सीखने के अनुभव को बढ़ाती है। यह सिद्धांत सुनिश्चित करता है कि पाठ्यपुस्तकें न केवल सूचनात्मक हों बल्कि दृष्टिगत और बौद्धिक रूप से उत्तेजक भी हों जो विभिन्न चरणों में विद्यार्थियों की विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करें।

9. **विविधता और समावेशन**— विविधता और समावेशन का यह सिद्धांत पाठ्यपुस्तक सामग्री में विविध दृष्टिकोणों और प्रतिनिधित्व को शामिल करने की आवश्यकता पर बल देता है। यह सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि "पाठ्यपुस्तकें किसी राज्य या देश में मौजूद संस्कृतियों, भाषाओं और अनुभवों की समृद्ध विविधता को दर्शाती हैं (*विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*, पृष्ठ 65, अनुच्छेद 3.2.4 जी)। क्षेत्रीय विविधताओं को स्वीकार करना और उन्हें शैक्षिक सामग्री में शामिल करना विद्यार्थियों को खुद को तथा अपने समुदायों को प्रतिनिधित्व करते हुए देखने में मदद करता है, जिससे उनमें अपनेपन की भावना और मतभेदों के प्रति सम्मान को बढ़ावा मिलता है। यह दृष्टिकोण न केवल समावेशिता को बढ़ावा देता है, बल्कि विद्यार्थियों की अपने आस-पास की दुनिया की समझ को भी व्यापक बनाता है। इससे विविध पृष्ठभूमि के लिए सहानुभूति और प्रशंसा को बढ़ावा मिलता है। विविध सामग्री को एकीकृत करके पाठ्यपुस्तकें रूढ़ियों को चुनौती दे सकती हैं और अधिक व्यापक और न्यायसंगत शिक्षा प्रदान कर सकती हैं। यह सिद्धांत यह भी सुनिश्चित करता है कि सभी विद्यार्थी, चाहे उनकी क्षेत्रीय या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो अपनी शिक्षण सामग्री में प्रासंगिकता और प्रतिनिधित्व पाएँ जो एक समावेशी और समग्र शैक्षिक अनुभव का समर्थन करता है।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में वर्णित पाठ्यपुस्तक निर्माण से संबंधित मुख्य सिद्धांतों के आधार पर कक्षा 6 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक *मल्हार* का विश्लेषणात्मक अध्ययन

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का उद्देश्य शिक्षा को अधिक प्रभावी, समावेशी और समग्र बनाना है। इसके अनुसार पाठ्यपुस्तकें शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का आधार हैं, जो विद्यार्थियों के ज्ञान एवं कौशल के विकास में सहायक होती हैं। पाठ्यपुस्तकें केवल विषय-वस्तु को प्रस्तुत करने का साधन नहीं होतीं, बल्कि यह विद्यार्थियों के सोचने-समझने और रचनात्मकता को

बढ़ाने का माध्यम भी होती हैं। *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* में वर्णित पाठ्यपुस्तक निर्माण के मुख्य सिद्धांत यह सुनिश्चित करते हैं कि पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों के शैक्षिक, सांस्कृतिक और विकासात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए बनाई जाएँ।

मल्हार पाठ्यपुस्तक के शीर्षक एवं कवर पृष्ठ का विश्लेषण

मल्हार कक्षा 6 के लिए रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित हिंदी की पाठ्यपुस्तक है। यह भाषा शिक्षण, साहित्यिक समझ और सांस्कृतिक मूल्यों को विकसित करने के उद्देश्य से तैयार की गई है। इसमें विभिन्न प्रकार की कविताएँ, कहानियाँ और निबंध आदि शामिल हैं। *मल्हार* का शीर्षक और कवर पृष्ठ न केवल सौंदर्यात्मक रूप से आकर्षक हैं; अपितु यह शिक्षाशास्त्रीय दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं। *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* में यह स्पष्ट किया गया है कि पाठ्यपुस्तकों के शीर्षक और कवर पृष्ठ विद्यार्थियों में जिज्ञासा, सांस्कृतिक जुड़ाव, भाषा के प्रति रुचि और रचनात्मक कल्पना को प्रेरित करने वाले होने चाहिए। वास्तव में *मल्हार* शीर्षक भारतीय सांस्कृतिक परंपरा से गहराई से जुड़ा हुआ है। यह प्रसिद्ध शास्त्रीय राग *मल्हार* का संकेतक है जो वर्षा ऋतु, शांति, सौंदर्य और प्रकृति की जीवंतता से जुड़ा हुआ है। यह शीर्षक बाल पाठकों में भावनात्मक जुड़ाव और कल्पनाशीलता की भावना को जाग्रत करता है। यह न केवल साहित्यिक संवेदना का प्रतीक है, अपितु भाषा की कोमलता और सांस्कृतिक गहराई को भी रेखांकित करता है।

पुस्तक का कवर पृष्ठ रंगों, चित्रों और दृश्य रूपों के माध्यम से बाल मनोविज्ञान के अनुकूल है। इसमें वर्षा, बच्चे, पेड़, बादल, हरियाली और प्रकृति के सुंदर दृश्य प्रस्तुत किए गए हैं जो *मल्हार* के शीर्षक के अनुरूप हैं। यह चित्रात्मक प्रस्तुति विद्यार्थियों को आकर्षित करती है और उन्हें विषय-वस्तु की ओर सहज रूप से खींचती है। यह प्रस्तुति पूर्ण रूप से विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में वर्णित प्रस्तुति सिद्धांत, संदर्भ सिद्धांत और शिक्षाशास्त्र सिद्धांत के अनुरूप है जिसमें भाषा शिक्षण को सौंदर्यबोध, भावनात्मक अनुकूलता और अनुभवात्मक जुड़ाव के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। अत: इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि *मल्हार* का शीर्षक और कवर पृष्ठ विद्यार्थियों को सशक्त और विचारोत्तेजक प्रवेश बिंदु प्रदान करते हैं जो उन्हें भाषा और साहित्य की दुनिया में ले जाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में वर्णित नौ सिद्धांतों के आधार पर *मल्हार* पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण निम्नलिखित है—

1. **पाठ्यक्रम सिद्धांत**— यह सिद्धांत सुनिश्चित करता है कि पाठ्यपुस्तकें ग्रेड और शैक्षिक चरण के लिए निर्दिष्ट दक्षताओं और सीखने के प्रतिभाओं को पूरा करती हों। *मल्हार* पुस्तक की पाठ्य सामग्री कक्षा 6 के विद्यार्थियों के भाषाई कौशलों की दक्षताओं के विकास पर केंद्रित है। पाठ्यपुस्तक में कहानी, कविता, निबंध एवं संस्मरण आदि विविध पाठ्य शामिल हैं जो हिंदी भाषा के विभिन्न पहलुओं को समझाने में मदद करते हैं। इसके अतिरिक्त *मल्हार* में विषय-वस्तु

को विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के लक्ष्यों के अनुरूप चयनित किया गया है। इसमें साहित्यिक, व्याकरणिक और व्यावहारिक भाषा शिक्षण के पहलुओं का संतुलन है। कविताएँ (मातृभूमि, पहली बूँद और जलाते चलो आदि) और कहानियाँ (हार की जीत एवं परीक्षा आदि) बच्चों को हिंदी साहित्य की विविधता से परिचित कराती हैं। अभ्यास और गतिविधियाँ (सोच-विचार के लिए, अनुमान या कल्पना से, शब्दों की बात एवं साझी समझ आदि) विद्यार्थियों के व्याकरण ज्ञान को सुदृढ़ करती हैं, जबकि कहानियाँ बच्चों को नैतिक शिक्षा देती हैं।

2. **मूल्य सिद्धांत**— *मल्हार* में नैतिक मूल्यों और सामाजिक संवेदनाओं को पाठों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में नैतिक और प्रेरणादायक कहानियाँ शामिल हैं जो बच्चों में मूल्यों और नैतिकता का विकास करती हैं। *मल्हार* की पाठयसामग्री में करुणा, सहिष्णुता, सम्मान और विनम्रता जैसे मूल्यों को सूक्ष्म रूप से समाहित किया गया है। पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त भाषा विचारोत्तेजक और नैतिकता से परिपूर्ण है। उदाहरण के लिए, पारिवारिक सहयोग, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और सामाजिक समावेशिता को दर्शाने वाले पाठ विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा प्रदान करते हैं। भाषा में भी वर्चस्ववादी दृष्टिकोण से बचते हुए संतुलित अभिव्यक्ति का प्रयोग किया गया है जिससे विद्यार्थियों में ज़िम्मेदारी और सह-अस्तित्व की भावना विकसित होती है। उदाहरण के लिए, 'गोल' पाठ में "दोस्त, खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं... तथा सफलता का कोई गुरु-मंत्र नहीं है। लगन, साधना तथा खेल भावना ही सफलता के सबसे बड़े मंत्र हैं।" इसके अतिरिक्त 'मेरी माँ' पाठ में वर्णित पंक्ति "माताजी के प्रोत्साहन तथा सद्व्यवहार ने मेरे जीवन में वह दृढ़ता उत्पन्न की कि किसी आपत्ति तथा संकट के आने पर भी मैंने अपने संकल्प को न त्यागा।" इस तरह की विषय-वस्तु न केवल बच्चों में मूल्यों और नैतिकता का विकास करती है; अपितु उनमें ज़िम्मेदारी तथा सह-अस्तित्व की भावना को भी विकसित करती है।

3. **अनुशासन सिद्धांत**— *मल्हार* के अधिकांश पाठ हिंदी साहित्य की समृद्ध परंपरा को प्रस्तुत करते हैं। इसमें पाठों का चयन और अनुक्रम अनुशासन के मूल सिद्धांतों के साथ सुसंगत है। यह पाठ्यपुस्तक हिंदी भाषा और साहित्य के अनुशासन के मूल सिद्धांतों का अनुसरण करती है। इसमें भाषा विज्ञान, व्याकरण और साहित्यिक विधाओं की तार्किक प्रगति को बनाए रखा गया है। कहानियाँ, कविताएँ और निबंध विधागत स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किए गए हैं जिससे वे विद्यार्थियों में हिंदी भाषा की सटीक समझ विकसित कर सकें। इसके अलावा साहित्यिक संदर्भों की प्रमाणिकता एवं भाषा की सटीकता सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, विभिन्न कविताओं, कहानियों एवं पाठों आदि के माध्यम से, जैसे— बूँद, हार की जीत, रहीम के दोहें और मेरी माँ आदि के द्वारा भाषा विज्ञान, व्याकरण और साहित्यिक विधाओं की तार्किक प्रगति को बनाए रखा गया है। उदाहरण के लिए, पुस्तक में पाठ की शुरूआत 'मातृभूमि' (कविता) से होती है, उसके बाद 'गोल' (संस्मरण), 'फिर एक

दौड़ ऐसी भी' (पढ़ने के लिए) जो विद्यार्थियों में साहित्यिक विधाओं की तार्किक प्रगति को बनाए रखती है।

4. **शिक्षाशास्त्र सिद्धांत**— इस सिद्धांत के अनुसार पाठ्यपुस्तकें ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थियों को सीखने के लिए प्रेरित करें। *मल्हार* में गतिविधियाँ और अभ्यास प्रश्न इस सिद्धांत के अनुरूप हैं। विशेषरूप से वर्णनात्मक प्रश्न और चर्चा आधारित गतिविधियाँ विद्यार्थियों की विश्लेषणात्मक क्षमताओं को विकसित करती हैं। उदाहरण के लिए, 'मातृभूमि' कविता में 'पंक्तियों पर चर्चा,' 'सोच-विचार के लिए', 'थोड़ा भिन्न-थोड़ा समान' तथा 'पाठ से आगे' से एवं 'गोल' पाठ में 'मेरी समझ से' तथा 'डायरी का प्रारंभ' आदि से संबंधित गतिविधियाँ शिक्षणशास्त्र सिद्धांतों को मूर्त रूप प्रदान करती हैं।

5. **भाषा सिद्धांत**— भाषा शिक्षण में पाठ्यपुस्तकों का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाना है। *मल्हार* की भाषा कक्षा 6 के विद्यार्थियों की भाषाई क्षमता के अनुकूल है। *मल्हार* में सरल और प्रभावी भाषा का उपयोग किया गया है जो बच्चों की उम्र और समझ के अनुकूल है। संवादात्मक और स्पष्ट शैली इसे अधिक आकर्षक बनाती है। कहानियों, दोहों और कविताओं के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यावहारिक भाषा का अनुभव मिलता है। सरल एवं स्पष्ट वाक्य संरचनाएँ इसे सुलभ बनाती हैं। उदाहरण के लिए, रहीम के दोहे पाठ के अंतर्गत 'पाठ से आगे' शीर्षक के अंतर्गत 'सरगम', आज की पहेली और 'खोजबीन के लिए' (पृष्ठ 49 एवं 50) के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यावहारिक भाषा का अनुभव मिलता है। तो वहीं 'मेरी माँ' आत्मकथा तथा 'जलाते चलो' कविता में 'सोच-विचार के लिए' और 'अनुमान या कल्पना से' (*मल्हार*, पृष्ठ 64 एवं 65) भी विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाती है।

6. **प्रौद्योगिकी सिद्धांत**— कक्षा 6 की हिंदी पाठ्यपुस्तक *मल्हार* का प्रौद्योगिकी सिद्धांत के आधार पर अध्ययन किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि इसमें डिजिटल संसाधनों का एकीकरण सीमित है। पुस्तक में अंत क्रियात्मक अभ्यास, मल्टीमीडिया संसाधन और ऑनलाइन संदर्भों के उचित उल्लेख का अभाव है। हालाँकि, यदि पाठ्यपुस्तक में ऑनलाइन संदर्भ लिंक, शैक्षिक वीडियो और डिजिटल अभ्यास जोड़े जाएँ तो यह सीखने को अधिक प्रभावी और रोचक बना सकता है। डिजिटल साधनों के समावेश से विद्यार्थी अवधारणाओं को गहराई से समझ सकते हैं, उनकी डिजिटल साक्षरता बढ़ सकती है और वे प्रौद्योगिकी-सक्षम शिक्षा से लाभान्वित हो सकते हैं।

7. **संदर्भ सिद्धांत**— संदर्भ सिद्धांत के अंतर्गत *मल्हार* पाठ्यपुस्तक में स्थानीय और सांस्कृतिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए सामग्री का चयन किया गया है। इसमें विभिन्न कहानियों और कविताओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति को उजागर किया गया है। पुस्तक स्थानीयता तथा वैश्विकता के बीच उचित संतुलन बनाए रखने का प्रयास करती है। हालाँकि, कुछ पाठों (एक दौड़ ऐसी भी, पेड़ की बात) के अंतर्गत अधिक व्यापक संदर्भों को शामिल किया जा सकता

था, जो विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों और दृष्टिकोणों से संबंधित परिचय कराने में अधिक सहायक सिद्ध हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, 'हार की जीत' कहानी के माध्यम से भारतीय संस्कृति को बड़ी ही गहराई के साथ उजागर किया गया है— "बाबा भारती ने स्वयं उसे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खडगसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा, "बाबाजी, इसमें आपको क्या डर है?" सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, "लोगों को यदि इस घटना का पता चला तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे। दुनिया से विश्वास उठ जाएगा।" तो वहीं 'परीक्षा' कहानी के माध्यम से साहस, आत्मबल, उदारता तथा दृढ़संकल्प को उजागर किया गया है।

8. **प्रस्तुति सिद्धांत**— *मल्हार* का प्रस्तुतीकरण विशेषरूप से चित्र और ले-आउट विद्यार्थियों के लिए आकर्षक है। चित्र सरल और विचारोत्तेजक हैं जो पाठ के अर्थ को समझने करने में सहायक हैं। पुस्तक का स्वरूप और चित्रांकन विद्यार्थियों को आकर्षित करता है। पाठों की संरचना क्रमबद्ध और सरल है। प्रत्येक पाठ (उदाहरण के लिए, हार की जीत, रहीम के दोहे, पेड़ की बात आदि) के अंत में दिए गए प्रश्न-उत्तर और गतिविधियाँ बच्चों की समझ को और गहराई प्रदान करती हैं। आकर्षक चित्रांकन और पाठों की संरचना विद्यार्थियों को पुस्तक पढ़ने के लिए प्रेरित करती है। हालाँकि पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु इसके प्रत्येक अध्याय के अंत में अध्याय एवं अधिगम विस्तार से संबंधित कुछ इंटरनेट लिंक अथवा संदर्भ और इंटरैक्टिव अभ्यास के लिए क्यू.आर. कोड आदि का समावेशन किया जा सकता था।

9. **विविधता और समावेशन सिद्धांत**— विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के विविधता तथा समावेशन सिद्धांत के अनुरूप *मल्हार* में विविध दृष्टिकोणों और क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व को जगह दी गई है। इसमें भारत के विभिन्न राज्यों एवं संस्कृतियों से जुड़ी सामग्री शामिल है, जो विद्यार्थियों को विविधता के महत्त्व को समझाने में मदद करती है। पाठ्यपुस्तक में ग्रामीण तथा शहरी परिवेश दोनों का समावेश किया गया है। विभिन्न वर्गों व समुदायों के अनुभवों को प्रदर्शित किया गया है। यह पुस्तक विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों का प्रतिनिधित्व करती है, जिससे सभी विद्यार्थियों को समान अवसर मिलते हैं। उदाहरण के लिए, रहीम के दोहे में 'शब्दों की बात' के माध्यम से मातृभाषा और बहुभाषिकता पर विशेष बल दिया गया है। 'सत्रिया और बिहू नृत्य' पाठ विभिन्न संस्कृतियों एवं विविधता के महत्त्व को समझाने में मदद करता है। वहीं पाठ के अंत में 'खोजबीन के लिए' शीर्षक के अंतर्गत भारत के पारंपरिक लोक संगीत से संबंधित उचित अभ्यास दिए गए हैं। हालाँकि, इसमें आधुनिक संदर्भों जैसे सतत विकास लक्ष्य, 21वीं सदी के जीवन कौशलों का समावेश तथा गतिविधियों में विविधता, जैसे— मन की बात, टेक्नोलॉजी आधारित विभिन्न प्रकार की इंटरैक्टिव गतिविधियाँ आदि को और अधिक व्यापक रूप में सम्मिलित किया जा सकता था।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा

सकता है कि कक्षा 6 की हिंदी पाठ्यपुस्तक *मल्हार* के रूप में विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के सिद्धांतों का पूर्ण रूप से अनुसरण करती है। यह विद्यार्थियों के भाषा कौशल, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक समझ को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इन सिद्धांतों के प्रभावी समावेश के कारण *मल्हार* न केवल भाषा शिक्षण का एक सशक्त माध्यम बनती है, बल्कि विद्यार्थियों को नैतिक रूप से संवेदनशील और विषय-विज्ञानी दृष्टि से समृद्ध बनाती है।

मल्हार पाठ्यपुस्तक — पाठ्यसामग्री के साथ आकलन का उचित समावेशन

कक्षा 6 की हिंदी पाठ्यपुस्तक *मल्हार*, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा प्रकाशित एक ऐसी शिक्षण सामग्री है जो विद्यार्थियों के भाषिक विकास के साथ-साथ उनके बौद्धिक, नैतिक और रचनात्मक विकास को भी पोषित करती है। यह पुस्तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एन.ई.पी. 2020) और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के निर्देशित सिद्धांतों पर आधारित है जिसमें पाठ्यसामग्री को विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुसार संयोजित किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता इसका आकलन के साथ गहन और सुसंगत समावेशन है जो विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया को सहज, सक्रिय और प्रभावी बनाता है। *मल्हार* की विषय-वस्तु विविध और व्यापक है। इसमें कहानियाँ, कविताएँ, संस्मरण, आत्मकथा, निबंध और दोहे जैसे साहित्यिक रूपों को संतुलित ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इन पाठों के माध्यम से विद्यार्थी केवल भाषा का ही अभ्यास नहीं करते, अपितु वे समाज, संस्कृति, मूल्यों और संवेदनाओं के विभिन्न पहलुओं से भी परिचित होते हैं। उदाहरण के लिए, 'गोल', 'मेरी माँ', 'हार की जीत', 'रहीम के दोहे' जैसे पाठ जीवन के विविध अनुभवों, मानवीय मूल्यों और साहित्यिक अभिव्यक्तियों का सुंदर मिश्रण प्रस्तुत करते हैं। इस तरह की सामग्री विद्यार्थियों के मन में जिज्ञासा, संवेदनशीलता और आलोचनात्मक दृष्टि को जन्म देती है।

पाठ्यसामग्री के साथ आकलन का समावेशन इस पुस्तक की एक और महत्त्वपूर्ण विशेषता है। *मल्हार* के प्रत्येक पाठ के अंत में ऐसे अभ्यास प्रश्न और गतिविधियाँ दी गई हैं जो विद्यार्थियों की रचनात्मकता, विश्लेषणात्मक क्षमता और अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करने में सहायक हैं। उपशीर्षक जैसे 'सोच-विचार के लिए', 'अनुमान या कल्पना से', 'पाठ से आगे', 'मेरी समझ से', 'थोड़ा भिन्न-थोड़ा समान' आदि यह दर्शाते हैं कि पुस्तक में केवल तथ्यात्मक उत्तरों की अपेक्षा नहीं की गई, अपितु विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से सोचने और अपनी समझ के अनुसार उत्तर देने के लिए भी प्रेरित किया गया है। यह दृष्टिकोण सतत और समग्र मूल्यांकन (सी.सी.ई.) की अवधारणा को बल देता है जो विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की की रूपरेखा 2023 का एक केंद्रीय उद्देश्य है।

इसके अतिरिक्त *मल्हार* की गतिविधियाँ केवल लिखित अभ्यासों तक ही सीमित नहीं हैं। इसमें मौखिक प्रस्तुति, चित्रवर्णन, संवाद लेखन, पाठ से संबंधित रचनात्मक लेखन, समूह चर्चा आदि जैसी गतिविधियाँ भी सम्मिलित हैं। ये अभ्यास विद्यार्थियों की विविध प्रकार की प्रतिभाओं को विकसित करने

के लिए अवसर प्रदान करते हैं और आकलन की प्रक्रिया को बहुआयामी तथा समावेशी बनाते हैं। यह स्पष्ट रूप से 'प्रस्तुति सिद्धांत', 'शिक्षाशास्त्र सिद्धांत' और 'विविधता एवं समावेशन सिद्धांत' के अनुरूप है। *मल्हार* में दी गई मूल्यांकन आधारित गतिविधियाँ विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों को ध्यान में रखकर तैयार की गई हैं। ग्रामीण और शहरी परिवेश, विविध सांस्कृतिक दृष्टिकोण, विभिन्न सामाजिक वर्गों के अनुभव आदि सभी को इस पुस्तक में प्रतिनिधित्व दिया गया है। इससे सभी प्रकार के विद्यार्थियों को अपनी पृष्ठभूमि के अनुरूप उत्तर देने और अपनी दृष्टि से सोचने का अवसर मिलता है। यह समावेशिता विद्यार्थियों को आत्म-स्वीकृति, आत्म-विश्वास और आत्म-प्रेरणा प्रदान करती है। अंततः यह कहा जा सकता है कि कक्षा 6 की हिंदी पाठ्यपुस्तक *मल्हार* पाठ्यसामग्री और आकलन के समावेशन की दृष्टि से एक सुदृढ़ और शिक्षाशास्त्रीय रूप से परिपक्व प्रयास है। यह विद्यार्थियों को केवल भाषा की जानकारी नहीं देती, अपितु उन्हें सोचने, महसूस करने और अभिव्यक्त करने के अवसर भी प्रदान करती है। वास्तव में इस पाठ्यपुस्तक को 21वीं सदी के शिक्षण लक्ष्यों की पूर्ति हेतु एक आदर्श पाठ्यपुस्तक कहा जा सकता है।

निष्कर्ष

कक्षा 6 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *मल्हार* विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के सिद्धांतों के अनुरूप तैयार की गई एक संतुलित पुस्तक है, जो एक प्रभावी शिक्षण अधिगम संसाधन के रूप में उभरती है। पाठ्यक्रम सिद्धांत के अनुसार पुस्तक की सामग्री कक्षा 6 के विद्यार्थियों की भाषा सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करती है। इसमें कहानियाँ, कविताएँ तथा संस्मरण आदि शामिल हैं, जो भाषा कौशलों के विकास में सहायक हैं। मूल्य सिद्धांत के अंतर्गत करुणा, सहिष्णुता एवं नैतिकता जैसे मूल्यों का संवर्धन किया गया है। अनुशासन सिद्धांत हिंदी भाषा तथा साहित्य की तार्किक प्रगति को दर्शाता है, जिससे साहित्यिक विधाओं की स्पष्ट समझ विकसित होती है। शिक्षाशास्त्र सिद्धांत के तहत पुस्तक में अभ्यास प्रश्न एवं गतिविधियाँ विद्यार्थियों की विश्लेषणात्मक क्षमताओं को बढ़ाते हैं। भाषा सिद्धांत की दृष्टि से इसमें सरल भाषा का प्रयोग किया गया है, जो व्यावहारिक और सहज है। प्रौद्योगिकी सिद्धांत के अनुसार इसमें डिजिटल संसाधनों का सीमित समावेश है, जिसे और अधिक बढ़ाया अथवा विस्तार दिया जा सकता है। संदर्भ सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है कि सामग्री स्थानीय तथा सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक हो, जबकि प्रस्तुति सिद्धांत के अनुसार पुस्तक का चित्रांकन एवं स्वरूप विद्यार्थियों को आकर्षित करता है। विविधता और समावेशन सिद्धांत के अनुरूप यह पुस्तक विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों को उचित प्रतिनिधित्व देती है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि *मल्हार* शिक्षा में नवाचार को समाहित करने वाली एक प्रभावी पाठ्यपुस्तक है, जो विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 की मूलभूत शिक्षा-नीतियों एवं सिद्धांत आदि को मूर्त रूप प्रदान करने में पूर्ण रूप से सक्षम है तथा यह पुस्तक विद्यार्थियों के भाषाई, साहित्यिक, सांस्कृतिक और नैतिक विकास आदि में विशेष रूप से सहायक सिद्ध होगी।

संदर्भ

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2023. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली. https://www.ncert.nic.in/pdf/NCFSE-2023-August_2023.pdf से प्राप्त किया गया।

———. 2024. *मल्हार*. कक्षा 6 की हिंदी पाठ्यपुस्तक. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NCF-School-Education-Pre-Draft.pdf दिनांक 1 दिसंबर 2023 को प्राप्त किया गया।

https://ncf.ncert.gov.in/ दिनांक 1 दिसंबर 2023 को प्राप्त किया गया।